वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह
(05 अप्रैल 2016) के अवसर पर
कुलपति का स्वागत वक्तव्य-सह-प्रतिवेदन

आज के इस दीक्षांत समारोह के अध्यक्ष-सह-मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल-सह-कुलाधिपति महोदय, दीक्षांत समारोह के लिए हमारे अनुरोध पर पधारे विशिष्ट अतिथि द्वय प्रो० ए० के० सक्सेना, महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान काँग्रेस संस्था एवं डा० ई० एल० एस० एन० बाला प्रसाद, प्रधान सचिव, राजभवन, पूर्व कुलपतिगण, विभिन्न विश्वविद्यालय से आए माननीय कुलपति एवं प्रतिकुलपतिगण, माननीय विधान पार्षदगण, अधिषद्, अभिषद एवं विद्वत-परिषद के सदस्यगण, शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, उपाधिग्रहण करने आये छात्र-छात्राओं, सम्मानित अतिथिगण, अभिभावकगण, विभिन्न छात्र संगठनों के प्रतिनिधिगण, मीडियाकर्मी बंधुओं एवं उपस्थित देवियो और सज्जनो!

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक धरती पर बिहार प्रदेश के शीर्ष संवैधानिक शिखर पुरूष, भारतीय संस्कृति के उन्नायक, सौम्य, शालीन, यशस्वी, महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द के आगमन से आज हमारा पूरा विश्वविद्यालय-परिवार गौरवान्वित महसूस कर रहा है। विश्वविद्यालय परिसर में आपके प्रथम आगमन के इस स्मरणीय अवसर पर मैं सभी लोगों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत और अभिनन्दन करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आपकी कृपादृष्टि इस विश्वविद्यालय पर हमेशा बनी रहेगी। प्रो० ए० के० सक्सेना, डा० बाला प्रसाद, पूर्व कुलपति डा० आई० सी० कुमार, मगध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० इश्तियाक, एल० एन० मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० साकेत कुशवाहा, प्रो० एस० एम० करीम, प्रतिकुलपति, ए० के० विश्वविद्यालय, पटना, प्रो० जे० पी० एन० झा, प्रतिकुलति, वी० एन० मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, प्रो० विजय लक्ष्मी सक्सेना, पूर्व महासचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था एवं सभी सम्मानित अतिथियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी गरिमामयी उपस्थिति इस दीक्षांत समारोह को अपने उत्कर्ष तक पहुचायेगी।

विश्वविद्यालय अपने आप को गौरवान्वित महसुस कर रहा है कि 5 अप्रैल को ही शाहाबाद के सपूत बाबू जगजीवन राम का जन्मदिन भी है।

एक अभिनव सृष्टि की रचना का प्रयास करने वाले महर्षि विश्वामित्र की तपोभूमि, मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की दीक्षा-भूमि, महाभारतकालीन एकचक्रानगरी और बिहार के सर्वाधिक पुराने जिलों में से एक शाहाबाद की इस क्रांतिभूमि में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है। सोननद, गंगा-सरयू और कर्मनाशा जैसी नदियों तथा कैमूर की मनोरम पहाड़ियों से घिरा यह भूभाग अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, गौरवशाली इतिहास और जीवन के विविध क्षेत्रों में यहाँ के धरती-पुत्रों द्वारा हासिल की गयी उपलब्धियों के कारण न केवल समूचे देश में बल्कि सारी दुनिया में जाना जाता है। प्राचीन काल में सघन वनों से आच्छादित यह क्षेत्र 'आरण्य' कहलाता था। रामायण-काल में करूष प्रदेश और कालान्तर में भोजवंशी शासकों के नाम पर इसे भोजपुर कहा गया। 1782 में इसे शाहाबाद नाम दिया गया। स्वतंत्र भारत में शासन-प्रबंध की सुविधा की दृष्टि से इसे भोजपुर, बक्सर

रोहतास और कैमूर नामक चार जिलों के रूप में विभाजित कर दिया गया किन्तु आज भी इन चारों जिलों में एक ही भोजपुरिया आत्मा निवास करती है।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अग्रिम पंक्ति के महान् सेनानी वीर बाँकुड़े बाबू कुँवर सिंह की प्रेरणादायक स्मृति को आने वाली पीढ़ियों के दिलो-दिमाग में हमेशा सुरक्षित रखने के उद्देश्य से तत्कालीन राज्य सरकार ने 22 अक्टूबर सन् 1992 को इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। मुझे इस बात का उल्लेख करने में हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि अपनी स्थापना के बाद वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय ने इस जनपद के देश-दुनिया में चर्चित और प्रतिष्ठित धरती पुत्रों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित एक पुस्तक-'शाहाबाद के सपूतः भारत के गौरव' का प्रकाशन करके उनकी स्मृति को स्थायी रूप से सुरक्षित रखने का भरसक प्रयास किया है।

महानुभावों! हमारा यह विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के कुल तेइस वर्ष पूरे कर चुका है। इसी वर्ष 22 अक्टूबर को यह अपने जीवन के चौबीस वर्ष पूरे करके रजत-जयंती वर्ष में प्रवेश करेगा। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में कुल 21 स्नातकोत्तर विभाग हैं, जिनमें विज्ञान, समाज विज्ञान, मानविकी एवं वाणिज्य संकायों के अन्तर्गत आने वाले प्रायः सभी विषयों की पढ़ाई होती है इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्राधीन कुल 17 अंगीभूत महाविद्यालय, 54 सम्बद्ध महाविद्यालय, 12 शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय, 03 विधि महाविद्यालय एवं 01 चिकित्सा महाविद्यालय है। कई अंगीभूत महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर तक की पढ़ाई होती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता मिलने के बाद से विश्वविद्यालय के विकास में काफी तेजी आयी है और आज यह राज्य के अन्य विश्वविद्यालयों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। हमारा विश्वविद्यालय परिवार इस बात के लिए संकल्पबद्ध है कि आने वाले समय में हम इसे सभी क्षेत्रों में शिखर तक ले जायेंगे।

मुझे आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि गत वर्षों में दर्जनों परीक्षाओं का सफल संचालन कर के हमने अपने यहाँ सत्र को लगभग नियमित कर लिया है। हमारे यहाँ शैक्षणिक कैलेंडर, परीक्षा कैलेंडर और खेल कैलेंडर को सफलतापूर्वक लागू किया गया है, जिससे सभी क्षेत्रों में नियमित और सुव्यवस्थित गतिविधियाँ चल रही हैं। हमारे सभी अंगीभूत महाविद्यालयों में ऑनलाइन नामांकन की व्यवस्था गत दो वर्षों से सफलतापूर्वक चल रही हैं। हमने पी०-एच०डी० से सम्बंधित यू०जी०सी० के नये रेगुलेशन को अपने यहाँ सफलतापूर्वक लागू किया है।

परम्परागत विषयों की पढ़ाई के साथ ही हमारा ध्यान विभिन्न व्यावसायिक एवं तकनीकी विषयों की पढ़ाई की तरफ भी है, जिससे हमारे छात्रों को रोजगार मिलने में आसानी हो रही है। हम इन विषयों के पाठ्यक्रमों को राजभवन से विधिवत् पूर्वानुमति हासिल करके ही लागू कर रहे हैं। हमारे विभिन्न महाविद्यालयों में इस तरह के विषयों की पढ़ाई सफलतापूर्वक हो रही है, जिससे क्षेत्रीय जनता के बीच काफी उल्लास और संतोष की स्थिति है। इस विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.) इकाई बहुत ही प्रभावशाली रूप से विभिन्न समाजिक कार्यों में अपना योगदान कर रही है एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली है। हर वर्ष हमारे छात्र देश के गणतंत्र दिवस पैरेड के लिए चयनित हो रहे हैं।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हमारे 17 अंगीभूत महाविद्यालयों में से 03 का चयन मॉडल महाविद्यालय के रूप में विकसित किये जाने हेतु किया गया है।

हमारे विश्वविद्यालय मुख्यालय के दो परिसर है। विश्वविद्यालय की स्थापना तत्कालीन राज्य सरकार द्वारा इस पुराने परिसर में ही की गयी थी। बाद में राज्य सरकार के सहयोग से जीरो माइल स्थित कृषि विभाग की लगभग 40 एकड़ जमीन हमें प्राप्त हुई। यू०जी०सी० और राज्य सरकार के सहयोग से विगत वर्षों में उस नये परिसर को विकसित करने के प्रयासों में काफी तेजी आई। उसकी चहारदीवारी और मुख्य द्वार का निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है। अभी वहाँ बी०एड० कॉलेज के भवन और परीक्षा भवन का निर्माण कार्य पूरा हुआ है। पुराने परिसर में नवनिर्मित स्नातकोत्तर महिला छात्रावास को पूरी तरह सुसज्जित करके उसे छात्राओं को आवंटित किया जा चुका है। इसी परिसर में विश्वविद्यालय अतिथि-गृह का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और उसे सुसज्जित करने की प्रक्रिया तेजी से चल रही है।

हमने विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय को प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध और परिपूर्ण बनाने का संकल्प लिया है। इसी दृष्टि से उसे डिजिटल लाइब्रेरी के रूप में परिणत किया जा रहा है।

आदर्श शैक्षणिक माहौल का निर्माण करने के उद्देश्य से हमने नियमित कक्षा-संचालन के साथ ही विभिन्न पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों के संचालन को भी प्राथमिकता दी है। फलस्वरूप हमारे स्नातकोत्तर विभागों और विभिन्न महाविद्यालयों में राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों और परिसंवादों का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। इसके साथ ही स्नातकोत्तर विभागों में स्मार्ट कक्षाएँ बनाई जा रही हैं, जिससे आने वाले दिनों में पठन-पाठन को रूचिकर और गुणवत्तापूर्ण बनाने में मदद मिलेगी।

महानुभावों! जैसाकि मैं पूर्व में आपसे निवेदन कर चुका हूँ, हमारा यह वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय प्रत्येक दृष्टि से राज्य के अग्रणी विश्वविद्यालयों के समकक्ष खड़ा है। कई दृष्टियों से तो हम अन्यों के मुकाबले आगे निकलने की स्थिति में भी हैं। किन्तु परिसर-विकास के मामले में हम दूसरों से काफी पीछे चल रहे हैं। इसी लिए हमारी भविष्य की कार्य योजनाओं में पहली प्राथमिकता राज्य सरकार के सहयोग से नूतन परिसर का विकास ही है। इसके लिए मास्टर प्लान पहले ही राज्य सरकार को भेजा जा चुका है। हमें उम्मीद है कि जल्द ही सरकार के स्तर से उसे स्वीकृति मिल जायेगी।

हमारी पूरी कोशिश है कि इस वर्ष के अंत तक हमारे अंगीभूत महाविद्यालयों और स्नातकोत्तर विभागों सहित सम्पूर्ण विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्ययन परिषद्(नैक) से मूल्यांकित हो जाये। इसके लिए हम सभी स्तरों पर प्रयासरत हैं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि विश्वविद्यालय-परिवार के सामूहिक संगठित प्रयासों के फलस्वरूप हम अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति में निश्चितरूपेण सफल होंगे।

हम आनेवाले दिनों में विभिन्न रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ करने जा रहे हैं। इसके साथ ही हमारी योजना पंचवर्षीय विधि स्नातक (एल०एल०बी०) पाठ्यक्रम लागू करने, विधि परास्नातक (एल०एल०एम०) और एम०एड० पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की भी है। इसी तरह हम पूर्ण विकसित कम्प्यूटर केन्द्र का निर्माण भी करना चाहते हैं। हमारी योजना एकैडमिक स्टॉफ कॉलेज स्थापित करने की भी है।

हमने छात्र-समुदाय के व्यापक हित में निकट भविष्य में छात्र संघ का चुनाव कराने का भी निर्णय लिया है, जिससे उनकी सभी न्यायोचित समस्याओं के त्वरित समाधान में तो मदद मिलेगी ही, उनमें समुचित नेतृत्व क्षमता का विकास करने और विश्वविद्यालय की निर्णय-प्रक्रिया में भागीदार बनाने में सहूलियत होगी।

अंत में अपनी बात समाप्त करने के पूर्व मैं आज के इस दीक्षांत समारोह में उपाधि-ग्रहण करने वाले सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल और मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। आप लोगों ने विभिन्न स्तरों पर अध्ययन करके जो ज्ञान अर्जित किया है, वह आपकी व्यक्तिगत उपलब्धि तो है ही, वह हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय उपलब्धि भी है। आज के बाद आप जीवन के अति व्यापक और विशाल विश्वविद्यालय में प्रवेश करने जा रहे हैं। वहाँ आपको आये दिन कटु-मधु अनुभव हासिल होंगे। संभव है, पग-पग पर कठिनाइयों और बाधाओं का सामना भी करना पड़े क्योंकि जीवन-पथ सुगम नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पुरूषार्थ और पराक्रम से अपना पथ प्रशस्त करना पड़ता है। मेरा अनुरोध है कि आप विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी अपने विवेक, धैर्य और साहस का परित्याग मत कीजियेगा। विश्वविद्यालय से अर्जित ज्ञान तब प्रकाश-स्तंभ की तरह आपके पथ को आलोकित करेगा और आप प्रत्येक दृष्टि से जीवन में सफल होंगे। मैं आप सभी को पुनः एक बार अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

इन्ही शब्दों के साथ मैं मंचासीन और सामने उपस्थित आप सभी महानुभावों का बार-बार स्वागत, बंदन और अभिनन्दन करता हूँ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।

जय हिन्द!

जय वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय!